उपनिषद्

उपनिषद् वेदों का अन्तिम काण्ड है इसीलिये इन्हें वेदान्त भी कहा जाता है।

(१) **ऋग्वेदीय** -- १० उपनिषद्
(२) **शुक्ल यजुर्वेदीय** -- १९ उपनिषद्
(३) **कृष्ण यजुर्वेदीय** -- ३२ उपनिषद्
(४) **सामवेदीय** -- १६ उपनिषद्
(५) **अथर्ववेदीय** -- ३१ उपनिषद्
कुल -- १०८ उपनिषद्

- १७वी सदी में **दारा शिकोह** ने अनेक उपनिषदों का **फारसी** में अनुवाद कराया।
- १९वीं सदी में जर्मन तत्त्ववेता **शोपेनहावर** और **मैक्समूलर** ने इन ग्रन्थों के जर्मन भाषा में अनुवाद किया।
- **उपनिषद्** शब्द का साधारण अर्थ है – समीप बैठना (ब्रह्म विद्या की प्राप्ति के लिए शिष्य का गुरु के पास बैठना)।
- यह शब्द **उप** और **नि** उपसर्ग पूर्वक **षद्लृ (सद्)** धातु से निष्पन्न हुआ है।
- सद् धातु के तीन अर्थ हैं – १- **विशरण**=नाश होना; २-**गति**-पाना या जानना तथा ३- **अवसादन**-शिथिल होना।

१०८ उपनिषदों में से १० उपनिषद् प्रमुख हैं।

ईशकेनकठप्रश्नमुण्डमाण्डूक्यतित्तिरि।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश॥

१.ईश, २.केन, ३. कठ, ४. प्रश्न, ५. मुण्डक, ६.माण्डूक्य, ७. तैत्तिरीय, ८.ऐतरेय , ९.छान्दोग्य, १०.बृहदारण्यक ये दश उपनिषद् मुख्य हैं।

गद्यात्मक उपनिषद् –

१. केन, २. प्रश्न, ३. तैत्तिरीय, ४. ऐतरेय, ५. छान्दोग्य, तथा ६. बृहदारण्यक

पद्यात्मक उपनिषद् –

१.ईश, २.कठ, ३.श्वेताश्वतर , ४. मुण्डक

प्राचीनता के क्रम से उपनिषद् –

१. ईश, २. ऐतरेय, ३. छांदोग्य, ४. प्रश्न, ५. तैत्तिरीय, ६. बृहदारण्यक, ७. मांडूक्य, ८. मुंडक,९. कठ, और १०. केन।

ईशावास्योपनिषद्

✓ **यह उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद का ४०वां अध्याय है और इसमें १८ मन्त्र हैं।**

॥ प्रमुख वाक्य ॥

- ईशावास्यमिदं सर्वम्।
- तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: मा गृध: कस्यस्विद्धनम्।
- कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।
- न कर्म लिप्यते नरे।
- तदेजति तन्नेजति।
- तत्र को मोह: कश्शोक: एकत्वमनुपश्यत:।
- अन्धं तम: प्रविशन्ति येऽविद्या/असम्भूति,मुपासते
- विद्ययाऽमृतमश्नुते / सम्भूत्यामृतमश्नुते।
- **हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।**
- इदं भस्मान्तं शरीरम्।
- अग्ने नय सुपथा ।

केनोपनिषद्

- इस उपनिषद् में **४ खण्ड** हैं।
- प्रत्येक में क्रमश: ८,५,१२ तथा ९ मन्त्र हैं। **कुल ३४ मन्त्र** हैं।
- यह **सामवेदीय जैमिनीयशाखा** के **तवल्कार आरण्यक** से लिया गया है इसलिये इसका **तवल्कार उपनिषद्** और **जैमिनीय उपनिषद्** भी नाम है।
- **उपनिषद्** शब्द सर्वप्रथम इस उपनिषद् में प्रयुक्त हुआ है।
- प्रथम तथा द्वितीय खण्ड में गुरु-शिष्य के संवाद से ब्रह्म के स्वरूप विषयक निरूपण है।
- तृतीय खण्ड में **यक्षस्वरूपधारी ब्रह्म का आख्यान** ,तथा चतुर्थ खण्ड में **उमाहैमवती आख्यान** है।

॥ प्रमुख वाक्य ॥

- केनेषितं पतति प्रेषितम्मन:।
- श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद् वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राण:।
- धीरा: प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।
- न तत्र चक्षुर्गच्छति नवाग्गच्छति नो मनो।
- तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते।

- अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम्।
- **विद्यया विन्दतेऽमृतम्।**
- ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये।
- उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्ता।
- तद्वनन्नाम तद्वनमुपासितव्यम्।
- यो वा एतामेवं वेद अपहत्य पाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति।

कठोपनिषद्

- यह कृष्णयजुर्वेद की कठशाखा से लिया गया है।
- इसमें दो अध्याय हैं तथा प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियां अर्थात् ६ वल्लियां हैं। कुल ११९ मन्त्र हैं।
- वाजश्रवा ऋषि विश्वजित् (सर्वमेध) यज्ञ करते हैं।
- यम नचिकेता सम्वाद इस उपनिषद् का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय है।
- नचिकेता यम से ३ वर मांगता है।
- प्रथम वर में पिता की कोपशान्ति।
- द्वितीयवर स्वर्ग में प्राप्त होने वाली अग्निविद्या।
- तृतीयवर में आत्मतत्व का ज्ञान मांगता है।

॥ प्रमुख वाक्य ॥

- अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति।
- बहूनामेमि प्रथमः बहूनामेमि मध्यमः।
- सस्यमिव मर्त्यः पचते।
- अतिथिर्नमस्यः।
- स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति।
- शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके।
- **येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।**
- अपि सर्वं जीवितमल्पमेव।
- **न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो।**
- अतिदीर्घे जीविते को रमेत।
- श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतः।
- श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यो।

- जानाम्यहं शेवधिरित्यनित्यम्।
- एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षरं परम् एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छसि तस्य तत्।
- **न जायते म्रियते वा विपश्चित्।**
- नायं हन्ति न हन्यते।
- आसीनो दूरं व्रजति शयानो याति सर्वतः।
- **आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।**
- इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
- पुरुषान्न परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः।
- **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।**
- **क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।**
- अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति।
- सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुः।
- न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकम्। (मुण्डक उपनिषद् २.२.१० तथा श्वेताश्वतर ६.१४ भी)
- ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः सनातनः।
- भयादग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यःभयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः।

तैत्तिरीय उपनिषद्

- **कृष्णयजुर्वेद** की **तैत्तिरीय शाखा** के **तैत्तिरीय आरण्यक** के सातवें से नवें अध्याय तक भाग से गृहीत इस उपनिषद् में **३ वल्लियां** हैं
- जिनका नाम **शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली, भृगुवल्ली** है।
- उनमें क्रमशः १२,९ तथा १० अनुवाक् हैं इसमें मन्त्र ही अनुवाक् कहे जाते हैं अर्थात् **कुल ३१ अनुवाक्** है।
- **वरुण भृगु आख्यान , अन्न की महिमा , पञ्चकोश ,आत्मा** आदि का विशिष्ट वर्णन है

॥ प्रमुख वाक्य ॥

- यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः।
- ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः।
- **श्रुतं मे गोपाय।**
- भूर्भुवस्सुवरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतयः।

- आकाशशरीरं ब्रह्म।
- ओमिति ब्रह्म।
- **सत्यं वद धर्मं चर।**
- **स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।**
- **मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्यदेवोभव।**
- **सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म।**
- एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी।
- अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायन्ते।
- अन्योऽन्तर आत्मा प्राण/मनो/विज्ञान/आनन्द,मयः
- सोऽकामयत् बहु स्यां प्रजायै
- **रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽनन्दीभवति।**
- आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन।
- यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते।
- अन्नं न निन्द्यात्।

बृहदारण्यक

- **यह आकार की दृष्टि से सबसे बडा उपनिषद् शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण का अन्तिम ६ अध्याय है।**
- **इस उपनिषद् में ६ अध्याय हैं।**
- **प्रत्येक अध्याय में क्रमशः६,६,९,६,१५ तथा ५ ब्राह्मण हैं।**
- **कुल ४७ ब्राह्मण हैं।**
- **प्रत्येक अध्याय में क्रमशः ८०,६६,९२,९२,३० और ७५ मन्त्र हैं।**
- **कुल ४३५ मन्त्र इस उपनिषद् में हैं।**
- **गार्गी याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी याज्ञवल्क्य, गार्ग्य अजातशत्रु, जनक याज्ञवल्क्य और श्वेतकेतु आरुणि आदि संवाद हैं**

॥ प्रमुख वाक्य ॥

- वागेव प्रतिष्ठा।
- असतो मा सद्गमय **तमसो मा ज्योतिर्गमय** मृत्योर्माऽमृतं गमय।

- आत्मैवेदमग्र आसीत्।
- कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोकः।
- **अहं ब्रह्मास्मि**
- आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यः।
- पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।

श्वेताश्वतरोपनिषद्

- इस उपनिषद् में ६ अध्याय हैं । तथा यह कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध है।
- प्रत्येक में क्रमशः १६,१७,२१,२२,१४ तथा २३ मन्त्र हैं।
- कुल ११३ मन्त्र श्वेताश्वतरोपनिषद् में हैं।
- इसके प्रवक्ता श्वेताश्वतर ऋषि हैं।
- जैन तथा बौद्ध दर्शन के कुछ मूल सिद्धान्त इस उपनिषद् में प्राप्त होते हैं।
- इस उपनिषद् में जगत का मूल कारण, ॐकार-साधना, परमात्मतत्त्व से साक्षात्कार, ध्यानयोग, योग-साधना, जगत की उत्पत्ति, संचालन और विलय का कारण, विद्या-अविद्या, जीव की नाना योनियों से मुक्ति के उपाय, ज्ञानयोग और परमात्मा की सर्वव्यापकता का वर्णन किया गया है।

॥ प्रमुख वाक्य ॥

- देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निर्गूढाम्
- संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरञ्च
- ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः
- स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरारणिं ध्याननिर्मथनाभ्यासादेवम्पश्येन्निगूढवत्।
- युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः
- श्रृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः
- विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो
- **नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय**
- नवद्वारपुरे देही हंसो लेलायते बहिः
- **अणोरणीयान्महतो महीयान्** (यह मन्त्र कठ में भी है १-२-२०।)
- अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाःसृजमानां सरूपाः

- नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नपुंसकः यद्यच्छरीरमादत्ते तेन तेन स युज्यते।
- यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।